श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

मोहे भूल गए सांवरिया,
आवनि कह गए अजहू न आये,
लीनी न मोरी खबरिया।
मोहे भूल गए सांवरिया....

दिल को दिए क्यों दुःख बिरहा के
तोड़ दिया क्यों महल बना कर,
आस दिला कर ओ बेदर्दी,
फेर ली काहे नजरिया।
मोहे भूल गए सांवरिया...

नैन कहे रो रो के सजना,
देख चुके हम प्यार का सपना,
प्रीत है झूठी,प्रीतम झूठा
झूठी है सारी नगरिया।
मोहे भूल गए सांवरिया....

॥ गीतम् 6 ॥

(अथ षष्ठप्रबन्धो मालवरागेण एकतालीताले गीयते)

निभृतनिकुञ्जगृहं(ङ्) गतया निशि रहसि निलीय वसन्तम् ।
चकितविलोकितसकलदिशा रतिरभसरसेन हसन्तम् ॥
सखि हे केशिमथनमुदारं(म्)॥
रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम् ॥ 1॥

प्रथमसमागमलज्जितया पटुचाटुशतैरनुकूलम् ।
मृदुमधुरस्मितभाषितया शिथिलीकृतजघनदुकूलम् ॥ 2॥ सखि हे

किसलयशयननिवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम् ।
कृतपरिरम्भणचुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम् ॥ 3॥ सखि हे

अलसनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलम् ।
श्रमजलसकलकलेवरया वरमदनमदादतिलोलम् ॥ 4॥ सखि हे

कोकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतन्त्रविचारम् ।
श्लथकुसुमाकुलकुन्तलया नखलिखितघनस्तनभारम् ॥ 5॥ सखि हे

चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम् ।
मुखरविशृङ्खलमेखलया सकचग्रहचुम्बनदानम् ॥ 6॥ सखि हे

रतिसुखसमयरसालसया दरमुकुलितनयनसरोजम् ।
निः(स्)सहनिपतिततनुलतया मधुसूदनमुदितमनोजम् ॥ 7॥ सखि हे

श्रीजयदेवभणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम् ।
सुखमुत्कण्ठितगोपवधूकथितं(वँ) वितनोतु सलीलम् ॥ 8॥ सखि हे